International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 2, February- 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

पराली एवं पर्यावरण प्रदूषण

श्रीमान सत्यवीर संह, जेबीटी अध्यापक

Satyaveerkhanna1976@gmail.com

पर्यावरण के बिना मनुष्य के जीवन का गुजारा नहीं हो सकता है। पर्यावरण स्वच्छ रखना समय की आवश्यकता भी है और जरूरत भी है। अगर हम देखे तो हम साफ पाते है क पछले बीस सालों में पर्यावरण काफी वषैला तथा जहरीला हुआ है। इसका प्रमुख कारण हमारी आवश्यकतायें है। इसके साथ ही जनसंख्या का तेजी से बढ़ना और एकल परिवार तथा उद्योग धंधों का बड़े पैमाने पर लगना हैं। पर्यावरण को वषैला बनाने में कृ ष, उद्योग धंधों ने महत्वपूर्ण भू मका अदा की है। इस बात की चर्चा क्योटो तथा कोपनहेगन में भी हुई है।

सभी ने इस बात पर बल दिया है क कस तरह से हम पर्यावरण को सही रख सके। आज पर्यावरण की वजह से ही अनेक प्रकार की बीमारियां तेजी से फैल रही है। जिसमें दिल हृदय व सांसों की बीमारी मुख्य है। पर्यावरण की यह समस्या हर बार सर्दियों में और ज्यादा वकराल हो जाती है जब कसान है धान की खेती करके पराली को जलाते हैं। इसी कारण से आंखों व सांसों की समस्या एकदम सुरसा राक्षस की तरह से बढ़ जाती है। कसान के लये धान की फसल मुख्य है ले कन इससे पर्यावरण को दुगना नुक्सान होता

है। पहले तो इससे बड़े पैमाने पर पानी का दोहन होता है और फर उससे ज्यादा कसान पराली का सही निस्तारण ना करके उसे जलाने की को शश करता है।

इसी का खा मयाजा है वह ना केवल मनुष्य जाति को भुगतना पड़ता है वरन इसके साथ ही हमें इस पराली के कारण ना जाने कतनी बीमारियां उपहार में मल जाती है। काफी बार ये बीमारियां हमारे लये काल का ग्रास भी बन जाती है। इस पराली के कारण ना केवल वहां का क्षेत्र प्रदू षत होता है।

वरन इसके साथ ही आस-पास का क्षेत्र भी प्रदू षत होता है। हमने देखा की कैसे दिल्ली के मुख्यमंत्री ने पर्यावरण तथा उसके प्रदूषण के लये हरियाणा तथा पंजाब को जिम्मेदार ठहराया। इसी के साथ ही दिल्ली को भी अपने राज्य में गा ड़यों के लये आड ईवन फार्मूला लागू करना पड़ा। इतना ही नहीं पराली को जलाने से रोकने के लये तथा पर्यावरण को बेहतर बनाने के लये हरियाणा सरकार ने भी कसानों को धान की फसल की बजाय अन्य फसलें उगाने के लये ना केवल प्रोत्साहित कया वरन प्रोत्साहन पैकेज भी देने की घोषणा की।

इसी के साथ ही हरियाणा सरकार ने पर्यावरण को बचाने के लये पराली जलाने पर भारी जुर्माना तथा लोगों को पराली ना जलाने के लये वज्ञापन तथा कसान जागरूकता कैंपों के माध्यम से उनको जागरूक करने के बारें में भी सोचा। इसी के साथ ही कसानों पर पूर्ण निगरानी के लये जियो सैटेलाईट आदि के माध्यम से निगारानी भी रखी। पर्यावरण की पूर्ण जागरूकता के लये इसी के साथ ही हरियाणा सरकार ने यह भी कहा क जिस भी पंचायत के क्षेत्र मंे पराली जलेगी उस पंचायत पर उ चत कार्रवाई की जायेगी।

इसी का परिणाम यह हुआ की इस पर कुछ अंकुश लगा। ले कन इसी के साथ ही यह भी सही है क जैसे की धान कटाई का समय आता है तो ना केवल हरियाणा पंजाब का पर्यावरण पराली की वजह से खराब हो जाता है वरन इसके साथ ही बहुत से लोगों को पर्यावरण संबं धत अनेक प्रकार की बीमारियां भी हो जाती है।

पराली पर्यावरण प्रदूषण फैलाने में कस प्रकार से योगदान दे रही है वह हम इसी के साथ ही समझ सकते है क ना केवल कुछ जिलों का पर्यावरण प्रदूषण का स्तर दुगना हो जाता है वरन इसके साथ ही आंखों से संबं धत वकार भी हो जाते है। पर्यावरण प्रदूषण के लये ना केवल पराली पर पूर्ण रूप से योगदान आवश्यक है ता क लोग इसको जलाना बंद करे वरन इसके साथ ही पर्यावरण को हम अन्य कसी रूप में प्रयोग कर सकते है वह कफायती वकल्प भी हमें ढूंढने होंगे।

इसी संदर्भ में महत्वूर्ण है क पराली को छोटे हिस्सों में तोड़ने के लये मशीन पर तथा इसी के साथ ही पराली को खाद बनाने वाली दवाई पर कुछ राज्य सरकारें वशेष प्रकार की छूट तो दे रही है ले कन वह छूट बहुत कम है तथा वह उंट के मुंह में जीरे वाली बात है। जरूरत है क इस पर 100 प्रतिशत छूट मले तथा इसी के साथ ही कसानों को भी धान की खेती की बजाय अन्य खेती के लये बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित कया जाये ता क कसान है वह धान की खेती की बजाय अन्य वकल्पों पर जाये।

अभी तक मात्र 7 प्रतिशत से कम कसान ही एमएसपी का फायदा उठा रहे है। सरकार को चाहिये क जो धान की बजाय अन्य खेती कसान कर सकते है उसका सरकार अच्छा एमएसपी घो षत करे और कसानों को जब इससे सीधा लाभ मलेगा या उनको दिखाई देगा तो वे धान की खेती की बजाय अन्य वकल्पों को आजमायेंगे।

अगर वे धान लगायेंगे ही नही ंतो फर पराली का धुंआ कहां से आयेगा और जब पराली का धुंआ ही नहीं होगा तो फर इससे हम अनेक प्रकार की बीमारियों से ना केवल बच सकते है वरन इसके साथ ही हम पर्यावरण को भी बेहतर बना सकते है तथा इस प्रकार से ना केवल हम स्वच्छ होंगें वरन इसके साथ ही आसपास के एरिया के लोग भी स्वच्छ होंगे और हम आने वाली पीढ़ियों के लये बेहतरीन पर्यावरण छोड़ सकते है। इस समय पराली जलाने से बचने के लये यही सबसे उतम तथा बेहतरीन वकल्प हो सकता है।

इसके साथ ही जरूरत है क सरकार भी कुछ इस प्रकार का प्रयास करे जिसमें क पराली के प्रदूषण से हम बच सके। इसके लये जरूरत है क सरकार शोध को वशेष महत्व दे और उस पर बड़े पैमाने पर पैसा खर्च करे ता क शोध के बेहतर परिणाम आये और हम इस पराली के पर्यावरण प्रदूषण से बच सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Rice_production_in_India#cite_note-LOC-1
2. https://Www.Statista.Com/Statistics/765691/India-Area-Of-Cultivation-For-Rice/
3. http://Www.Downtoearth.Org.In/News/Crop-Burning-Punjab-Haryana-S-Killer-Fields-55960
4. https://www.statista.com/statistics/765691/india-area-of-cultivation-for-rice/
5. https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/how-stubble-burning-is-the-biggestculprit-for-poor-air-quality-in-delhi-a-ground-report-from-haryana-punjab/articleshow/61609110.cms
6. http://hrsdi.in/activefire/LIST/Note%20Stubble%20burning%202017.pdf 7. Milham, N. Kumar, P., Crean, J. and Singh, R.P. (2014). Policy instruments to address air pollution issues in agriculture: implications for Happy Seeder technology adoption in India. Final Report. FR2014-1
7. Australian Centre for International Agricultural Research (ACIAR). Canberra ACT 2601, Australia. (www. aciar.gov.au/publication/fr2014-17)

8. https://www.researchgate.net/publication/272683595_UTILIZATION_OF_PADDY_STRAW_AS_ ANIMAL_FEED
9. http://nrcmushroom.org/Bull_PSM.pdf,
10. http://www.downtoearth.org.in/coverage/straw-for-income-48452
11. http://www.thehindu.com/news/national/other-states/meerut-farmers-dont-burn-crop-stubble-theymake-manure-out-of-it/article20392428.ece
12. http://www.tribuneindia.com/news/business/hpcl-to-set-up-rs-600-crore-bio-ethanol-unit-inbathinda/408603.html
13. http://cpcb.nic.in/displaypdf.php?id=bWFudWFsLW1vbml0b3JpbmcvQWlyX1F1YWxpd HlfRGF0YV9EZWxoaS1OQ1JfSmFuMjAxOC5wZGY=
14. http://Agricoop.Nic.In/Sites/Default/Files/Annual_Rpt_201617_E.Pdf
15. Nagendran, R. Agricultural Waste and Pollution. Waste 2011, 341–355.
16. United Nations. Glossary of Environment Statistics, Studies in Methods; Series F, 67;
17. Department for Economic and Social Information and Policy Analysis, Statistics Division: New York, NY, USA, 1997; Volume 96. Int. J. Environ. Res. Public Health 2019, 16, 832 15 of 19 3. OECD (Organisation for Economic Co-operation and Development). 2001. Available online: https://stats. oecd.org/glossary/detail.asp?ID=77 (accessed on 10 November 2018).